: चतुर्थ अध्याय :

आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन

: चतुर्थ अध्याय :

'आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन'

4.1 नारी जीवन

4.1.1 नारी का व्यक्तिगत जीवन ।

अ) सरल तथा भावुक नारी जीवन ।

आ) स्वच्छंदी नारी जीवन ।

4.1.2 नारी का पारिवारिक जीवन

अ) शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन ।

आ) कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन ।

4.1.3 नारी का सामाजिक जीवन

अ) विवश तथा घृणित नारी जीवन ।

आ) जागृत नारी जीवन ।

4.1.4 नारी का धार्मिक जीवन

(अ) भाग्यवादी नारी जीवन ।

(आ) अंधविश्वासू नारी जीवन ।

4.1.5 नारी का आर्थिक जीवन :

(अ) परावलंबी नारी जीवन ।

4.1 <u>नारी जीवन</u> :-

भारतीय समाज में प्राचीन काल से नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है किंतु युगानुरूप नारी जीवन परिवर्तित होता गया । प्राचीन कालीन नारी का उच्च स्थान मध्य युग में एक विलास प्रिय खिलौना जैसा बन गया । शिक्षा का अभाव, आर्थिक पराधीनता तथा सामाजिक और पारिवारिक बंधनों में जकड़ी हुई नारी अपना जीवन सँवारने तथा उज्ज्वल बनाने में असफल होती गई। आधुनिक युग में नारी को अपना एक अलग व्यक्तित्व अवश्य प्राप्त हुआ फिर भी उसे इस व्यक्तित्व निर्माण के लिए संघर्ष करना पड़ा और इस संघर्ष में अनेक समाज सुधारकों का सहयोग रहा । भारतीय नारी अपने हृदय में स्थित त्याग, दया, क्षमा, कोमलता, भावुकता, सहनशीलता, उदारता, मेहनती प्रवृत्ति के कारण अपने जीवन में आती हुई कठिनाइयों का सहजभाव से सामना करती है । समाज द्वारा हो रही अपनी उपेक्षा, शोषण अपमान को सहते हुए अंत तक स्नेहवर्षा करती हुई अपना जीवन बिताती है ।

नारी को शक्तिदायिनी माना जाता है। वह पुरुष से अधिक समर्थ होती है। वह बिना किसी सुरक्षा के अपनी भीतरी शक्ति के कारण किसी भी तरह अपना जीवन बिता सकती है । परिवार में पुरुष के न रहने पर वह बच्चों का पालन पोषण कर सकती है, उन्हें समाज का सभ्य नागरिक बनाते हुए उन्हें अपने पैरों पर खड़ा रहना सिखाती है । नारी-शिक्षा ने नारी जीवन को एक आदर्श और ऊँचा स्थान प्राप्त करने में मदद की है। आधुनिक युग में नारी धीरे-धीरे हर क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना रही है । वह पुरुष के साथ सहयोगी, सहचरी के रुप में हर कार्य में आगे बढ़ रही है और अपने एक प्रगत जीवन का परिचय करा रही है। नारी परिवार तथा समाज में विविध अंगों से अपना जीवन विकसित कर रही है। जैसे –

व्यक्तिगत जीवन में अपनी बौद्धिकता के सहारे एक प्रतिष्ठित तथा सम्मानित पद हासिल करती हुई परिवार तथा समाज के सामने एक आदर्श प्रस्थापित करती है। परिवार में वह एक सुसंस्कारित तथा सुशील पुत्री, पत्नी तथा माता का जीवन बिताती है। जो अपने साथ परिवार का भी विकास करती है । समाज में वह हर क्षेत्र में अपने पद पर स्थानापन्न होकर कार्य करती है । नारी को पुरुष से मेहनती और ईमानदार माना जाता है । नारी कोई भी कार्य लगन या एकाग्र भाव से करती है । वर्तमान युग में नारी के स्वावलंबी जीवन को ही नारी मुक्ति की दृष्टि से महत्त्व दिया जा रहा है । नारी जीवन के विकास के बारे में महादेवी वर्मा जी ने लिखा है,

"यदि उनके जन्म के साथ विवाह की चिंता न कर उनके विकास के साधनों की चिंता की जावे, उनके लिए रुचि के अनुसार कला, उद्योग-धन्धे तथा शिक्षा के द्वार खुले हो, जो उन्हें स्वावलंबिनी बना सके और तब अपनी शक्ति और इच्छा को समझकर यदि वे जीवनसंगी चुन सके तो विवाह उनके लिए तीर्थ होगा, जहाँ वे अपनी संकीर्णता मिटा सकेंगी, व्यक्तिगत स्वार्थ को बहा सकेंगी और उनका जीवन उज्ज्वल से उज्ज्वलतर हो सकेगा।"[1]

भारतीय नारी जीवन में अधिकतर ग्रामीण नारी का जीवन अति कष्टमय, अपमान और उपेक्षा से भरा रहा है । ग्रामीण नारी में शिक्षा का अभाव अंधश्रद्धायुक्त वातावरण, समाज के संकुचित दृष्टि के कारण नारी जीवन अपने में ही सीमित अथवा सिमटा हुआ है । दिन-रात कष्टमय जीवन, सुख-सुविधाओं से अपरिचित, उपहासास्पद जीवन ग्रामीण नारी बिता रही है जैसे - चिड़िया को पिंजड़े में बंद किया हो । जब किसी असहाय नारी-जीवन का प्रश्न उठता है तो उसका भरण-पोषण या रक्षक रुप में कम अपितु शोषक रुप में समाज की दृष्टि अधिक

रहती है । दुराचारी प्रवृत्ति के कारण, परित्यक्त्या जैसी असहाय नारियों को समाज में कामुकता की नजर से देखा जाता है और उसे अनेक प्रलोभन दिखाकर बुरे मार्ग को स्वीकार करने के लिए विवश कर दिया जाता है। अधिकतर अशिक्षित नारियाँ ऐसे प्रलोभनों के कारण अपना जीवन दुष्कर बना लेती है । राम आहुजा लिखते हैं,

"उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में भारत में स्त्रियों को अनेक नियोग्यताओं को भोगना पड़ा, जैसे बाल विवाह, बहुपत्नी विवाह, विवाह के उद्देश्य से लड़कियों की बिक्री, विधवाओं पर कठोर प्रतिबंध, शिक्षा प्राप्त करने पर प्रतिबंध तथा गृहस्थ कार्यों तथा बच्चों के लालन-पालन तक ही अपने को सीमित रखना आदि ।"[2] नारी की इस प्रकार की विवशता के कारण उसे कहीं-कहीं दासी से भी बदतर जीवन जीना पड़ता है फिर भी अपने अशिक्षित किंतु संस्कारित मन के कारण ही जीवन के अंत तक वह आनेवाले संकटों का सामना करती है ।

ग्रामीण नारी की अपेक्षा शहरी वातावरण में स्थित नारी का जीवन सुखमय तथा स्वावलंबी बन रहा है । शिक्षा प्रसार तथा शिक्षा संस्था के उपलब्धियों के कारण नारी का जीवन ग्रामीण नारी से बेहतर माना जा सकता है । शहरी महिलाओं की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षित महिलाओं की संख्या बहुत कम है । उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करनेवाली लड़कियों का प्रतिशत शहरों में अपेक्षाकृत अधिक है। शहरी नारी उच्चशिक्षा पाकर अपने पैरों पर खड़ी होने का प्रयास करती है। स्वावलंबी बनकर अपना जीवन सँवारती है । आधुनिक परिवेश के प्रभाव से वह अपना व्यक्तिगत, पारिवारिक जीवन सुधारने का प्रयास करती है। किंतु धीरे-धीरे शहरी नारी के प्रगत जीवन का प्रभाव ग्रामीण नारियों पर हो रहा है । आज-कल ग्रामीण नारी भी शिक्षा तथा अन्य क्षेत्र में अग्रसर होती जा रही है । फिर

भी अधिकतर नारियों का जीवन शिक्षित होते हुए भी पूर्वप्रचलित रुढ़ि-परंपरा एवं अंधश्रद्धा से ग्रासित दिखाई देता है । शहरी हो या ग्रामीण, अपने संस्कारित मन एवं पूर्वप्रचलित 'अबला' नारी अभिशापानुसार व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक अन्यायों को सहती रहती है । अभी तक पुरानी रुढ़ि-परंपरा की श्रृंखला में वह जकड़ी हुई है।

राम आहुजा के मतानुसार,

"एक बड़ी संख्या में महिलाएँ मुक्ति प्राप्त करने में असफल रहती है क्योंकि वे परंपरागत नारी जगत के घेरे से बाहर नहीं निकल पाती उन्हें न तो समाज से और न अपने पति से ही पुरुषों के समान होने के लिए आवश्यक सहायता मिलती है। निस्संदेह आज भी वे पुरुषों के अत्याचारों का शिकार हैं ।"[3]

राघव जी ने 'राई और पर्वत', 'पतझर' और 'कल्पना' की ग्रामीण और शहरी मध्यवर्गीय नारी जीवन से परिचित कराया है। मध्यवर्गीय नारी का व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन रुढ़ि-परंपरा, अंधश्रद्धा से भरा हुआ है। परिणामतः राघव जी के विवेच्य उपन्यासों की नारी दुखों और कठिनाइयों से जूझते अपना जीवन बिताती है। विवेच्य उपन्यासों की नारियों का हृदय भावुक, संवेदनशील, संस्कारित होने के कारण उन्हें प्रसंगानुरुप या परिस्थितीवश बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम या मानिसक कुंठा आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वे घुटनभरा एवं दब्बू जीवन बिताती हैं और समाज उसकी सहायता करने के बावजूद उस पर ज्यादा ही दबाव डालता है उसे विवश बनाता है। असहाय नारी को और भी असहाय बनाता है। राघव जी की धारणा है कि भारतीय महिला आज भी आर्थिक रुप से पुरुष के प्रभुत्त्व से मुक्त नहीं इसलिए उन्होंने विवेच्य उपन्यासों में नारी को अपने परावलंबी जीवन को छोड़कर आत्मनिर्भर बनने का संदेश

दिया है। उन्होंने नारी जीवन की समानता के अधिकार के लिए नारी शिक्षा एवं स्वतंत्रता के महत्त्व को स्पष्ट किया है।

विवेच्य उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारियों का व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन विविध अंगों से विकसित होता हुआ दिखाई देता है । इन विविध अंगों से नारी के विभिन्न पहलू विशेषताएँ या सामाजिक विषमताओं का चित्रण स्पष्ट होता है।

4.1.1 व्यक्तिगत नारी जीवन :-

मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन उसकी अंतर्गत विशेषताओं तथा बाह्यजगत से संबंधित होता है। कभी-कभी पुरुष की अपेक्षा नारी का व्यक्तिगत जीवन बड़ा ही कुतूहलनीय और प्रभावात्मक बनता है। नारी का स्वभाव, दैनंदिन व्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन, आदि के कारण आते हुए सुख-दुख से उसके व्यक्तिगत जीवन का अध्ययन किया जाता है। भारतीय समाज में नारी को अबला तथा क्षीण शक्ति का प्रतीक माना जाता है। किंतु आज उसी नारी ने अपने सबला रुप को प्रकट करते हुए अपने असहाय जीवन को आत्मनिर्भर बनाया है। हर एक नारी का व्यक्तिगत जीवन अलग प्रकार का होता है। शिक्षित हो या अशिक्षित कुछ नारियाँ सीधी-सरल, भावुक होती हैं तो कुछ स्वच्छंद वृत्ति की होती हैं । इसी वृत्ति के अनुसार उनका वैयक्तिक जीवन उभरता है। जैसे - 'राई और पर्वत' की विद्या, 'पतझर' की मोहिनी और 'कल्पना' की नीला, सीता, अवदातिका, बकुलावलिका आदि नारियाँ भावुक, सरल तथा सीधा जीवन बिताती हैं । तो फूलवती, निर्मला, मोहिनी का स्वच्छंद वृत्ति से भरा व्यक्तिगत जीवन चित्रित हुआ है ।

(अ) <u>सरल तथा भावुक नारी जीवन</u> :-

राघव जी के विवेच्य उपन्यासों के प्रमुख नारी पात्र सीधा-सरल तथा भावुक जीवन बिताती हैं । ये नारियाँ शिक्षित भी हैं और अशिक्षित भी हैं । परंतु समझदारी, व्यावहारिकता, मर्यादाशील और निष्पाप मन के कारण वे अपने जीवन में दुख-ही-दुख पाती हैं । परिवारवालों की तथा समाज की कुदृष्टि को पहचानती हुई भी अपने मन की सरलता के कारण वह उन्हें नजरअंदाज करती हैं ।

'राई और पर्वत' की विद्या, बाल विधवा है। वैधव्य के नाम से संत्रस्त होकर वह ससुराल से मायके चली आती है । ससुराल में सास तथा जेठानी विद्या की सरलता का फायदा उठाती हुई घर का सारा काम उससे करवा लेती है। ससुर और जेठ उससे शरीर सुख की अपेक्षा करते हैं किंतु विद्या मर्यादा की पालनहार और पवित्रता को माननेवाली होने के कारण बदले की भावना छोड़ मायके चली आती है

मायके में उसकी माँ ही उसकी सरलता का फायदा उठाती हुई हरदेव के साथ चल रहे अपने प्रेम-संबंध को छुपाना चाहती है। अपनी बेटी को रामभरोसे के साथ अनैतिक संबंधों के लिए उकसाती है । विद्या भी भावुकता के कारण माँ की चाल में फँस जाती है। माँ, विद्या के साथ ममताभरा व्यवहार कर भंग मिलाया हुआ प्रसाद खिलाती है, नशे का चूर्ण मिलाया हुआ दूध पिलाती है। सीधी-सरल एवं भावुक विद्या माँ की कूटनीति से अनजान थी और इसी कारण उसे रामभरोसे के साथ बदनाम होना पड़ता है। मर्यादाशील और पवित्र होने के कारण अपने नारीत्व को नष्ट करने आए माँ के 'मुँहबोले भाई' हरदेव की उसे हत्या करनी पड़ती है। हत्या के बाद विद्या अपना जुर्म कबुल करती है। कत्ल के संबंध में पत्रकार की पूछताछ पर

विद्या कहती है, "उसने मेरी इज्जत पर डाका डालना चाहा था बाबूजी।"[4] विद्या निडरता से फाँसी की सजा चाहती है। सरलता और भावुकता के कारण अपनी माँ के अनैतिक संबंधों को अंत तक छुपाके रखती है। न चाहते हुए भी अपने माता-पिता की पवित्रता या महानता को अपना नाम बिगाड़कर कायम रखती है।

अकेलेपन में वह अपनी बाल्यावस्था को याद करती थी कि कितने लाड़-प्यार में अपना बचपन बीता । माँ कितना प्यार करती थी, पिता तथा चाचा ने कितने प्यार से पाला था। किंतु कुछ दिनों में प्यार का स्थान स्वार्थ ने लिया था। माँ अपने प्रेम संबंधों को छुपाए रखने के लिए विद्या को झूठा प्यार देती थी जिससे विद्या भी पिघल जाती थी। भंग मिलाया हुआ प्रसाद या नशे का चूर्ण मिलाया हुआ दूध माँ के झूठे प्रेम के मोह में फँसकर वह प्राशन करती है और उसके सर पर कलंग लगा दिया जाता है । माँ झूठे वात्सल्य के साथ घर के कामों में विद्या का हात बँटाती थी तो विद्या का मन गद्‌गद् हो जाता। वह माँ की सेवा करना चाहती है। विद्या का कथन है, "अम्मा, पाँ दबा दूँ तेरे। तू मेरे लिए कितना काम करती है ।"[5] विद्या की धारणा है कि मेरे वैधवावस्था के कारण ही माँ ने सुहाग के चिह्न छोड़ दिए हैं । पिता वृद्ध है तो उसने भी अपने को बुढ़िया बना लिया है। धरम-करम में लगी रहती है। विद्या का सिर माँ के सामने आदर से, ममता से झुक जाता था।

सारा गांव विद्या के खिलाफ था, उसे भूखा मारना चाहता था किंतु घृणित होने पर भी रामभरोसे उसकी सहायता करता हुआ कंगाल हो जाता है। जब रामभरोसे विद्या के लिए आटा, दाल ले आता है तब रामभरोसे की स्थिति को पहचानती हुई वह आधा सामान उसे वापस ले जाने के लिए कहती है। क्योंकि विद्या

भी चिंता करती है कि वह क्या खाएगा? इस प्रकार घृणा, भावुकता में परिवर्तित हो जाती है।

'पतझर' की मोहिनी शिक्षित होती हुई भी सीधी-सरल और भावुक है। परस्पर आकर्षण और भावुकता के कारण वह जगन्नाथ से प्रेम करने लगती है। किंतु उसे अपने प्रेम को माता-पिता से छिपाना पड़ता है। मोहिनी को लगता है कि अगर पिता अपने प्रेम-संबंध को जान गए तो उन्हें बड़ा दुख होगा। वे रुढ़ि-परंपरावादी होने के कारण उनके मन को कष्ट होगा। इसीलिए माता-पिता की चिंता में मोहिनी अपने प्रेम को गुंगेपन में कैद कर लेती है और अपने प्रेमी से बिछड़ने के गम में मानसिक रुप से विकृत बन जाती है। जन्म-जन्मांतर से 'प्रावर्णा' और 'रमिया' के रुप में मोहिनी भावुक जीवन बिताती आई है।

'कल्पना' में नीला का जीवन भी सीधा-सरल और भावुक है । वह शिक्षित होने के कारण समझदार और व्यावहारिक भी थी। औरत होते हुए भी उसे गहनों का आकर्षण नहीं था। वह सोने के अलंकार को सुंदरता नहीं तो एक मोल-तोल करने की मँहगी वस्तु मानती थी। इस संबंध में वह युरोप की नारी और भारतीय नारी की तुलना करती है और गहना पहनना बर्बर युग की निशानी के बराबर मानती है। अपने पति का पर स्त्री से प्रेम-संबंध के कारण नीला दुखी तो है फिर भी उसे अपने पति पर विश्वास है । डॉक्टर और निर्मला को राजम, सिनेमागृह में देखकर नीला को बताती है तो राजम की बातों पर वह अविश्वास रखती हुई कहती है, "कैसे? क्या? एक शहर के रहनेवाले हैं । एक दूसरे को जानते हैं । मेरे पति ऐसे नहीं हो सकते। वे नहीं होंगे। शायद तुमने किसी और को तो देख नहीं लिया?"[6] और पति के घर आने पर वे तुरंत ही नीला को सिनेमा के बारे में बता

देते हैं कि हम सिनेमा देखने गए थे। तब नीला अवाक् रह जाती है कि यदि इस व्यक्ति के मन में पाप होता तो क्या वह इस तरह सच बता सकता था? इनके बारे में कुछ भी सोचना गलत है। सरलता और भावुकता के कारण नीला अपने दुखी मन से समझौता कर लेती है।

'कल्पना' के सहारे 'मेघदूत' वर्णित यक्षी का जीवन भी सरल और भावुक दिखाई देता है। वह अपने प्रिय का संदेश लानेवाले मेघों की राह देखती रहती है। मेघ के न आने के कारण निराश होकर वह अपनी शय्या पर सिर धरकर बहुत रोती है। रो-रोकर उसकी आँखें सूझ जाती है। लेखक ने भावुक जीवन को स्पष्ट करते हुए कहा है, "तुम्हारे वस्त्र मैले हो गए हैं। तुम्हारी वीणा आँसुओं से भीगी-सी उधर रखी है। शायद देहलीज पर शाप की अवधि के दिन गिनने के लिए तुमने ही ये फूल चढ़ाए हैं ?"[7]

अवदातिका का जीवन भी सरल एवं भावुक है। वह लेखक को महापुरुष राम और सीता की कहानी भावुकता के साथ सुनाती हैं राम और सीता के वनागमन का कारण स्वयं को मानती है। क्योंकि उसने मजाक में लाए वल्कल को सीता ने पहना था, इसी कारण उन्हें चौदह वर्ष वन जाना पड़ा ऐसी अवदातिका की धारणा है। अवदातिका महाकवि भास पर रुष्ट होती है। उसका कथा है, "महाकवि! तुम बड़े निर्दय हो।....... जब भट्टिनी सीता वनवास को चलीं, तब तुमने मुझे उनसे मिलकर रोने क्यों नहीं दिया? क्या मेरा हृदय नहीं था? या तुमने मुझे अनुचरी जानकर इतना महत्त्व देने की आवश्यकता नहीं समझी? जब सारी अयोध्या का हाहाकार दिखाना तुम न भूले, तब मेरा हाहाकार तुमने मुझे क्यों न सुनाने दिया ।......तुम मुझे महाराज दशरथ के पास नहीं रख सकते थे? क्या मैं उनकी सेवा नहीं कर सकती थी? क्या

तुम मुझे माता कौशल्या के पास नहीं रख सकते थे?...... तुमने मुझे उस धीरवती सुमित्रा की सेवा में ही छोड़ा होता जो लक्ष्मण की माता थी। महाकवि। तुमने मुझे कहीं का न रखा।"[8] अवदातिका की इच्छा थी कि केवल अंत में तो महाकवि ने मुझे दिखाया होता। उस समय मैं उनका वल्कल तो उतरवाती। जब अवदातिका को मालूम होता है कि लेखक नाटक भी लिखते हैं तो वह लेखक से कहती है, "तुम क्यों नहीं राम कथा पर कुछ लिखते? मुझे अवसर दो न?"[9]

बकुलावलिका भी सीधी-सरल और भावुक थी। विदुषक जब बकुलावलिका पर राजा अग्निमित्र और मालविका की भेंट का कठिन काम सौंपता है तो वह चिंतित हो जाती है कि अगर राणी को पता चला तो क्या होगा? चिंतित होकर वह कहती है, "विधाता भी कैसा विचित्र है। हमें जन्म देकर कहीं छोड़ देता है। फिर हमें जीवित रहने के लिए कितना परिश्रम करना पड़ता है। तुम सोचते होंगे कि मैं बहुत सुखी होऊँगी?"[10] बकुलावलिका स्वयं अपने हाथ से मालविका के चरण रंगाकर उस पर राणी ने भेजे नूपुर चढ़ाती है। वह मालविका को अपनी ही देह मानती है। अत: राघव जी ने अपनी इन नारी पात्रों का जीवन सीधा-साधा, सरल और भावुक चित्रित किया है।

(आ) <u>स्वच्छंदी नारी जीवन</u> :-

समाज में कुछ नारियाँ स्वच्छंदी जीवन बिताती हैं किशोरावस्था के साथ-साथ विवाहोत्तर जीवन में भी वे स्वच्छंदी जीवन को अपनाती हैं । अपनी इच्छानुसार उच्छृंखल व्यवहार करती है । न उन्हें घरवालों की पर्वा होती है आर न समाज की । परंतु ऐसी नारियों का जीवन दुखद ही बन जाता है। उन्हें समाज तथा

परिवारवालों की अवहेलना को सहना पड़ता है। कभी-कभी अकल्पित संकटों का सामना करना पड़ता है। राघव जी के 'राई और पर्वत', 'पतझर' तथा 'कल्पना' की फूलवती, मोहिनी और निर्मला स्वच्छंदी जीवन बिताती हुई चित्रित हुई है ।

'राई और पर्वत' की फूलवती किशोरावस्था से हरदेव के साथ प्रेम करती थी। उसके पिता भी कहते थे कि यह लड़का बड़ा हो जाएगा तो इसीका अपनी बेटी से ब्याह करूँगा। हरदेव और फूलवती बचपन से ही एक-दूसरे को पति-पत्नी मानते थे। किंतु पिता की असमय मृत्यु के पश्चात् चाचा ने पैसों के लालच में आकर हरदेव और फूलवती के विरोध के बावजूद भी फूलवती का विवाह एक अधेड़ वृद्‌ध के साथ किया था। विवाह के पश्चात् वह देवर द्‌वारा बलात्कार की शिकार बनती है किंतु वह अपने पति से यह घटना छुपाके रखती है। कुछ दिनों तक देवर के साथ हँसी-खेल में पूर्ववत् जीवन बिताती है। किंतु हरदेव के मिलने पर वह उसके सहारे देवर को मार डालती है और हरदेव के साथ अपना संबंध रखती है।

विधवा बेटी के वापस घर आने पर धरम-करम का ढोंग रचाकर मंदिर जाया करती है। घर में पूजा-अर्चा का नाटक करती है। किंतु मंदिर के नाम पर वह हरदेव से मिलने जाती थी। मंदिर में हरदेव के साथ वह विद्या को हटाने की तरकीबें भी रचाती थी। अपने पति को इस बात से अनजान रख हरदेव के साथ प्रेम-संबंध रखती है। हरदेव रोज रात फूलवती से मिलने आता था। इसी तरह एक रात विद्या अपनी माँ के स्वच्छंदी जीवन का अंत कर देती है। फूलवती से मिलने आए हरदेव के पास विद्या ही चली जाती है, जिसको देख फूलवती के मन में हरदेव के प्रति घृणा पैदा होती है। हरदेव भी अंधेरे के कारण विद्या को फूलवती समझ लेता है।

उन दोनों को देख फूलवती संतप्त होकर कहती है, "तू मुझे पहचान नहीं पाया?.... यों कह, लड़की जवान दिखी तो नया दोना पसंद आ गया ।"[11] इसी तरह फूलवती और हरदेव के बीच का प्रेम घृणा में परिवर्तित होता है। फूलवती अपने पति के सामने अपने स्वच्छंदी जीवन को स्पष्ट करती है। अपने गुनाह को कबुल करती है जिसे सुनकर वृद्ध पति की मृत्यु होती है और मृत पति के साथ अपमानित फूलवती सती जाती है। अपने स्वच्छंदी जीवन को भस्मकर समाज की नजर में सती बनी रहती है ।

'कल्पना' में निर्मला भी एक स्वच्छंद तथा उच्छृंखल जीवन बिताती है। वह एक शिक्षित युवती है, गर्ल स्कूल में पढ़ाती है और एक डॉक्टर के साथ प्रेम-संबंध रखती है। उसके साथ घूमती-फिरती है, सिनेमा देखने जाती है। डॉक्टर के घर आती-जाती है। डॉक्टर के विवाह पश्चात् भी वह डॉक्टर से मिलने आधी रात में जाती है। निर्मला कहती है, "मैं इनके बिना नहीं रह सकती। मैं संसार में किसी की भी चिंता नहीं करती।"[12] निर्मला अपने पति को धोखे में रख डॉक्टर से प्रेम संबंध रखती है। निर्मला के मत से अपने विवाह होने के पश्चात् भी हम अलग नहीं हो सकते। वह डॉक्टर को ही अपने जीवन का एक मात्र आधार मानती थी। निर्मला आधी रात भी डॉक्टर से मिलने जाती है। वह कहती है, "मुझे किसी का डर नहीं लगता। जब मैं तुम्हारे बारे में सोचती हूँ तो मुझे उड़ने की इच्छा होती है। मुझे एक ही डर लगता है। .....कहीं तुम अपनी इस औरत के पीछे मुझे भूल न जाओ ।..... ..तो मैं मरने से भी नहीं डरती। सच कहती हूँ, जिस दिन तुम मुझे दगा दोगे, मैं उस दिन जहर खा लूँगी। तुम तो पुरुष हो । मैं स्त्री हूँ। तुम जो कर रहे हो, वह सब यह समाज क्षमा कर सकता है, लेकिन मैं अपने पति से धोखा कर रही हूँ और

मेरे लिए कोई भी सहारा नहीं है ।"[13] और नीला भी उन्हें उनके स्वच्छंदी तथा उच्छृंखल व्यवहार को पूरा करने की इजाजत देती है इससे अपमानित एवं लज्जित निर्मला जहर खाकर एक होटल में आत्महत्या कर अपने स्वच्छंदी जीवन को मिटा देती है।

'पतझर' में शिक्षित मोहिनी के स्वच्छंदी जीवन का चित्रण हुआ है। वह अपने परिवार, माता-पिता के विचारों के बारे में न सोचती हुई जगन्नाथ से प्रेम करती है। किंतु कुछ ही दिनों में माता-पिता तथा समाज की मान-मर्यादा के कारण उसे अपने प्रेमी से बिछड़ना पड़ता है। मोहिनी जन्म-जन्मांतर से 'प्रावर्णा', 'प्रतीची' के रुप में स्वच्छंदी जीवन बिताती है किंतु उन्हें भी अपने प्रेमी से बिछड़ना पड़ता है।

4.1.2 पारिवारिक नारी जीवन :-

परिवार पति-पत्नी, पुत्र-पुत्रियाँ, भाई-बहन आदि से बनता है। डॉ. (श्रीमती) वीणा गौतम ने परिवार की व्याख्या की हैं कि, "परिवार एक ऐसी इकाई है जिसमें व्यक्ति की सहज मनोवृत्तियाँ अपने धनीभूत रुप में फलती-फूलती हैं।"[14] पारिवारिक जीवन में परिवार में सम्मिलित सदस्यों का आपसी मेल-जोल या परस्पर-व्यवहार का विचार किया जाता है। नारी का पारिवारिक जीवन कभी सुख तो कभी दुख से भरा होता है। परिवार के लिए नारी जैसे स्वयं को समर्पित करती है और इसी कारण कभी-कभी परिस्थितिवश उसे परिवारवालों से घृणा तथा नफरती व्यवहार को सहन करना पड़ता है, जैसे परिवारवाले उसका शोषण कर रहे हो। और ऐसे घृणित व्यवहार से शोषित तथा पीड़ित नारी अपना जीवन बिताती है। किंतु कहीं-कहीं नारी अपने परिवारवालों के दुर्व्यवहार से संतप्त होकर कर्मठ तथा कठोर

जीवन बिताती है और वह दूसरों के साथ भी कठोरता से व्यवहार करती है।

(अ) <u>शोषित तथा पीड़ित नारी जीवन</u> :-

नारी को अपने ही परिवार में शोषित तथा पीड़ित जीवन जीना पड़ता है। मजबूरी अथवा परिस्थिति के कारण उसे परिवारवालों की घृणा तथा तिरस्कृत व्यवहार को सहना पड़ता है। असहायता और संस्कारित होने के कारण न वह परिवारवालों से अलग हो सकती है बल्कि उनके विरोध के कारण उसका जीवन और भी शोषित तथा पीड़ित बन जाता है। भारतीय समाज में प्रचलित कुछ कुरीतियों तथा कुप्रथाओं ने नारी का जीवन शोषित या पीड़ित बना दिया है। जैसे - विधवा का जीवन, परित्यक्त्या, निर्धन नारी का जीवन पीड़ित ही होता है।

'राई और पर्वत' में विद्या और फूलवती का जीवन भी शोषित एवं पीड़ित है। फूलवती का उसके ही चाचा और देवर शोषण करते हैं। वे फूलवती की मजबूरी और असहायता के कारण अपना-अपना स्वार्थ साध लेते हैं और फूलवती को मानसिक तथा शारीरिक रुप से पीड़ामय जीवन जीना पड़ता है। परिणाम स्वरुप वह मानसिक रुप से विकृत बन जाती है।

विद्या का तो ससुरालवालों और मायकेवालों से मानसिक तथा शारीरिक रुप से शोषण होता है। विधवा होने के पश्चात् घर का सारा काम उसे करना पड़ता है जैसे - बर्तन मांझना, कपड़े धोना, खाना पकाना, कंड़े थापना आदि। ऊपर से विधवा और पति की मृत्यु का कलंक आदि से ताने सुनने पडते थे। उसकी असहायता को देख ससुर और जैठ उसको छेड़ते थे। विद्या को बहुत दुख होता कि जिनसे अपनी रक्षा की आशा रखनी चाहिए वे ही उसे वासना की नजर से देखते थे।

ससुरालवालों से त्रस्त होकर वह मायके आती है किंतु मायकेवाले तो उनसे भी भयावह व्यवहार विद्या के साथ करते है। 'माँ' जिसे विद्या पवित्र और महान रुप समझती थी वह अपने स्वार्थ के लिए बेटी को कुमार्ग पर चलाना चाहती है। पिता के मन में भी बेटी के विरूद्ध उल्टी-सीधी बातें भरवाकर पिता का मन बेटी के विषय में कलुषित बन जाता है। माँ द्वारा प्रसाद में भंग मिलाकर विद्या को खिलाया जाता है। भंग के नशे के कारण वह माँ द्वारा भेजे हुए रामभरोसे के हाथ से रबड़ी खाते हुए गांववालों और पिता के सामने पकड़ी जाती है। पिता संतप्त होकर अनजाने में निर्दोष बेटी को अंत तक पापिन तथा कलंकिनी, कुलटा मानते हैं। उनका कथन है, "कुलटा! मर क्यों न गई तू? कौन बैठा था तेरे पास..... सारी औरतें नाम ले-लेकर हँसती जा रही थी तेरा.... मैंने सुना तो मर गया...... तभी ससुराल को नाम लगाकर आ गई। वहाँ पर कतर दिए होंगे उन्होंने। सोचा होगा, यहाँ मौज की छनेगी।......सारा गांव थूं-थूं करेगा अब.....। इसने आग लगा दी मेरे मुंह में। कमीन की बच्ची..... यार के साथ..।"[15]

निर्दोष होते हुए विद्या ऐसी घृणित बातें सुनकर मानसिक रुप से त्रस्त हो जाती है, संतप्त हो जाती है। रामभरोसे के हाथ से रबड़ी चखने की छोटीसी भूल के कारण उसे उनके घृणित व्यवहार को चुपचाप सहना पड़ता है। और अंत तक अपने शोषण एवं पीड़ा को दबाए रखती है। बोलना चाहते हुए भी चुपचाप पीड़ित जीवन बिताती है। वह स्वयं को दोषी मानती हुई कहती है, "हां अम्मा। मैं बहुत बुरी हूँ। सारा गाँव मुझ पर हँस रहा है। कल मैं मस्त हो गई थी न? मैं ससुराल में कुलटा हूँ न? मुझे झाडू मारो। लोगों को इतना ही मालूम है। यह तो लोगों की दुनिया है। लोगों की दुनिया में लोगों का जानना ही सच है।"[16]

किंतु विद्या का शोषण करनेवाले तथा उसे पीड़ित करनेवाले माँ-बाप का अंत दुखद हो जाता है।

'कल्पना' में नीला को भी अपने पिता और पति द्वारा शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताना पड़ता है। नीला का विवाह एक डॉक्टर के साथ हो जाता है, जो पत्नी को पत्नी नहीं एक पराई औरत मानता है। और नीला से पति जैसा व्यवहार करने में व्यभिचार मानता है। क्योंकि वह किसी और से प्रेम करता था। नीला अपने पति के दुर्व्यवहार को अपने संस्कारित मन के कारण सहती रहती है। किंतु नीला के मन का विद्रोह उबल उठता है, नीला के विवाह का राज खुल जाता है कि, जिसके कारण नीला के पिता ने अपने स्वार्थ के कारण डॉक्टर पिता और डॉक्टर को मजबूर किया था। परिणामत: डॉक्टर ने मजबूरी में नीला के साथ विवाह किया था। अत: नीला वैवाहिक सुखों से वंचित रह जाती है। अपनी आशा-आकांक्षा को मन में दबाकर एक घुटनभरी जिंदगी बिताती है। अपनी आँखों के सामने अपने पति और उसकी प्रेमिका के प्रेम भरे व्यवहार को देख तिलमिला उठती है। किंतु समझदार होने के कारण वह चुप रहती है। नीला का त्याग और समझदारी से लज्जित और अपमानित डॉक्टर अपनी पत्नी के बारे में न सोचते हुए आत्महत्या करता है। और अंत तक नीला को शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताना पड़ता है।

'पतझर' की मोहिनी को जातिभेद प्रथा के कारण शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताना पड़ता है। उसके पिता अपनी झूठी शान के कारण अपनी बेटी का विवाह एक इंजिनिअर से करना चाहते थे। वे अपनी बेटी के सुख के बजाए उसे दुख देते हैं। अपनी बेटी के प्रेम-संबंध की बात सुनकर वे संतप्त हो जाते हैं । वे मोहिनी की शादी दूसरी जगह तय कर देते हैं। किंतु मोहिनी के पीड़ित जीवन की

सुरक्षा की ओर उनका ध्यान बँटाते हुए डॉक्टर कहते हैं,

"........आप उसकी शादी कर दीजिए, पराये घर चली जाएगी। आगे उसे सदमा लगता है या वह अपने-आपको नई जिंदगी के साथ एड्जस्ट कर लेती है, वह सब तो होता रहेगा, आपकी जिम्मेदारियाँ तो खत्म हो जाएँगी। यह कौन देखता है हरबंसलाल जी, कि लड़की का आगे क्या होता है। आपकी ज़िम्मेदारी इतनी ही है कि आपने उसे पढ़ा दिया, लिखा दिया और उसकी शादी कर दी। एक मशीन की-सी जिंदगी रहती है लड़की के सम्बन्ध में। उसके बाद पागल हो जाए बला से, उसका पति समझेगा, आप क्यों फिकर करें।"[17] वे अपनी बेटी पर पुराने रीति-रिवाजों को थोपना चाहते हैं। किंतु मोहिनी पिता के मत से सहमत नहीं है। वह अपने प्रेमी को पाना चाहती है। किंतु संस्कारित मन और कर्तव्य तथा मर्यादापाल के कारण वह प्रेमी से बिछड़ जाती है और मनोरुग्ण बन जाती है। मनोरुग्णता में उसे कई बार बिजली के झटकों को सहना पड़ता है। मोहिनी जन्म-जन्मांतर से शोषित तथा पीड़ित जीवन बिताती आई है।

(आ) कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन :-

समाज में कर्मठ तथा कठोर नारी जीवन भी दिखाई देता है। परिस्थितिवश तथा प्रसंगानुसार नारी में यह प्रवृत्ति पाई जाती है। कहीं-कहीं नारी पर हुए अन्यायों के कारण वह इस वृत्ति की शिकार बन जाती है, तब न ही वह परिवारवालों के संबंध में सोचती है और न समाज के संबंध में। अपने स्वार्थ के लिए वह समाज के साथ अपने परिवारवालों को भी धोखा देती है। उनके साथ बुरा व्यवहार करती है जैसे - 'राई और पर्वत' की फूलवती, 'पतझर' की प्रतीची का जीवन कर्मठ तथा कठोर दिखाई देता है।

'राई और पर्वत' की फूलवती अपनी इच्छा के विरूद्ध एक वृद्ध से विवाह होने, ससुराल में आते ही देवर द्वारा बलात्कार की शिकार और अपनी वासना की अतृप्ति के कारण वह कर्मठ तथा कठोर बन जाती है। अपने देवर को जहर देकर मार डालती है और अंत तक इस हत्या का पता नहीं लगने देती। पति को अंधेरे में रखकर हरदेव से अवैध संबंध रखती है। अपने स्वार्थ के लिए अपनी बेटी को भी इस अनैतिक मार्ग पर चलाना चाहती है। जब वह इन्कार कर फूलवती का विरोध करती है, तो अपनी बेटी को बदनाम करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ती। रामभरोसे को उकसाकर विद्या के पीछे लगा देती है। भंग मिलाया हुआ प्रसाद खिलाती है, नशे का चूर्ण मिलाया हुआ दूध पीने को देती है। रामभरोसे भी फूलवती के कहने से विद्या को दो बार छेड़ता है। परिणामतः विद्या दरांत से उसे मारती है। अपनी बेटी का विरोध देख वह उसे अपना दुश्मन समझने लगती है। बात-बात पर उसे धमकी देती रहती। बेटी के खिलाफ अपने पति को भड़काती है। जैसे उसका कथन है, "मैं पहले ही कहती थी। विधवा की आग जाने कब भड़क उठे।"[18]

जब विद्या माँ के अनैतिक संबंध का राज खोलती है तो माँ भड़क उठती है। अपनी बेटी को बुरे-बुरे शाप देने लगती है। उसे धमकी देती है कि उसकी हत्या कर लाश को गायब कर दूँगी तथा लाश को चील-कौओं को खिला दूँगी। माँ के व्यवहार से ऐसे लगता है कि विद्या का ससुराल में ही रहना अच्छा था। माँ के मत से एक बार बेटी ब्याह दी, सो ब्याह दी। वह जब पराई ही हो गई तो उसको यहाँ लाने की जरुरत ही क्या थी? माँ को विद्या पर तनिक भी विश्वास नहीं था। वह इतनी पवित्र है, ऐसी हठीली है, तो क्या विद्या को ऐसी गैयत समझती है? उसे पता है कि उस घर में जेठ और ससुर से निभाना बड़ा कठिन है, तब भी वह ऐसी

बात कहती है? लेखक ने फूलवती के कठोर जीवन का संक्षिप्त परिचय ही यहाँ दिया है, "यहीं धरम-करम में लगी बैरागन पतबरता माँ। यही थी जो बूढ़े पति और सारे गांव की आँखों में धूल डाले जाती थी। यही कारण था कि यह विद्या का आगमन देखकर क्रुद्ध हो गई थी। यहीं स्त्री है जो अपने सुख के लिए अपनी ही बेटी को नींद की बेहोशी में सुला देती है रोज और तब उसका पतन करना चाहती है। ऐसी नीच है यह।"[19] जैसे विद्या, फूलवती के रास्ते में रोड़ा बन गई हो। इसीलिए वह अपनी बेटी के साथ-साथ जो भी रास्ते में आएगा उसे कुचल ड़ालना चाहती थी। हरदेव की सहायता तथा साथ के कारण वह निड़र बन गई थी। गांववाले हरदेव से डरते थे। और हरदेव, फूलवती का प्रेमी होने के कारण फूलवती समाज के साथ-साथ पति और बेटी के साथ भी कठोरता से व्यवहार करती थी। इसी तरह फूलवती का पारिवारिक जीवन कर्मठ तथा कठोर दिखाई देता है।

'पतझर' में तीन हजार साल पूर्व के जन्म में मोहिनी 'प्रतीची' नामक गंधर्वी के रुप में कठोर जीवन बिताती है। प्रतीची अपनी काम-वासना तृप्त करने के लिए विश्वावसु के पास आती है। अपनी इच्छा-तृप्ति के बाद वह एक बालक को जन्म देती है। किंतु एक दिन अपने पुत्र को विश्वावसु के पास सुलाकर वह चली जाती है। गंधर्वों के नियमानुसार वह मुक्त है, स्वतंत्र है। विश्वावसु के पूछने पर वह कहती है,

"इसका भरण-पोषण तुम करोगे। सनातन का यही नियम है कि गंधर्वी स्वतंत्र है, अप्सरा है। यदि वह चाहे तो बालक का पालन करे अन्यथा पुरुष को ही यह कार्य करना होगा।.... मैं मुक्त हूँ विश्वावसु । तुम मेरे ऊपर कोई बंधन नहीं बाँध सकते।"[20] और प्रतीची अपने पति और पुत्र को हमेशा के लिए छोड़कर चली जाती

है। माँ होकर भी वह अपने पति और पुत्र के प्रति दुर्व्यवहार करती हुई कठोर जीवन बिताती है।

4.1.3 <u>सामाजिक जीवन</u> :-

सामाजिक नारी जीवन में समाज में प्रचलित नारी जीवन का अध्ययन किया जाता है। समाज में स्थित उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्गानुसार नारी अपने व्यक्तितत्व तथा कार्य के आधार पर समाज में कभी सम्मानित जीवन प्राप्त करती है तो कभी समाज से उसे विडंबना एवं प्रताड़ना सहनी पड़ती है। उच्चवर्गीय तथा निम्नवर्गीय नारी की अपेक्षा मध्यवर्गीय नारी पूर्व प्रचलित रुढ़ि-परंपरा के नियमों का कठोरता से पालन करती हुई दब्बू जीवन बिताती है। अपने जीवन में आती हुई कठिनाइयों या परिस्थिति के कारण उसे विवश होना पड़ता है। साथ ही कभी-कभी घृणित जीवन जीना पड़ता है।

राघव जी ने अपने उपन्यासों में मध्यवर्गीय नारी जीवन को चित्रित किया है, जो अपनी इच्छा, आशा-आकांक्षाओं को पूर्ण नहीं कर सकती। समाज और परिवार के आधिकार तथा दबावों के कारण वह कुंठित जीवन बिताती है। विवेच्य उपन्यासों में नारी के परिवर्तित भिन्न रुपों के कारण उसके अकल्पित जीवन का चित्रण किया है। जो परिवार के बीच एक रुप में तो समाज में एक रुप ऐसे द्विरुपों में अपना जीवन बिताती है। परंतु इन मध्यवर्गीय नारियों को परिस्थितिनुकूल तथा विवशता के कारण भिन्न रुपों को अपनाना पड़ता है। इसी तरह भिन्न रुपों को अपनाती हुई वह विवश तथा घृणित जीवन बिताती है। किंतु राघव जी ने अपने नारी पात्रों को अपनी मुक्ति तथा स्वतंत्रता की दृष्टि से जागृत किया है। अत: विवश नारी अपने जीवन के प्रति जागृत होती है। परिणामत: नारी के विवश तथा घृणित जीवन के

साथ-साथ जागृत नारी के जीवन को भी दिखाया है।

(अ) विवश तथा घृणित नारी जीवन :-

समाज में नारी चरित्र का विशेष महत्त्व होता है। इस वर्ग में स्त्री के चरित्र की अधिक चिंता की जाती है। सामाजिक वास्तव्य में उसे अपने व्यक्तित्व की ओर विशेष ध्यान देना पड़ता है। कभी-कभी नारी अपनी असहायता के कारण परिवार के साथ-साथ समाज के अत्याचारों को सहती रहती है। क्योंकि ऐसी नारियों में अत्याचार का विरोध करने की क्षमता होते हुए भी वह स्वयं को शक्तिहीन समझने लगती हैं और विवश तथा घृणित जीवन बिताती हैं।

'राई और पर्वत' में फूलवती और विद्या विवश और घृणित जीवन बिताती है । फूलवती की इच्छा भी थी कि वह अपना जीवन हरदेव के साथ बिताए। परंतु उसकी किस्मत में एक अधेड़ वृद्ध को पति रुप में स्वीकारना पड़ता है। फूलवती के विरोध को ठुकराकर चाचा उसका विवाह गिरिधर पंडित के साथ कर देते है। फिर भी वह अपने नसीब को कोसती हुई वृद्ध गिरिधर के साथ जीवन बिताने के लिए विवश हो जाती है। जैसे - "जो होना था सो हो गया। अब तो मेरा पति है वही जो आग के फेरे देकर लिवा लाया है और इसीके लिए जीना होगा। बूढ़ा है तो, अंधा है तो। पर पति ही पति है।"[21] किंतु देवर द्वारा बलात्कार की शिकार होने के कारण और हरदेव से बिछड़ने के कारण उसका मन और भी दुखी बन जाता है। इसी कारण अपनी इच्छानुरुप जीवन जीने के लिए उसे बाह्याडंबर को अपनाने के लिए विवश होना पड़ता है। और वह समाज तथा अपने पति की आँखों में धूल झोंककर हरदेव के साथ प्रेम-संबंध के बीच बनी दीवार 'विद्या' को हटाने का भरघोस प्रयास करती है। किंतु अपनी बेटी द्वारा अपने प्रेम-संबंध का पर्दाफाश करने और

हरदेव पर अविश्वास निर्माण होने के कारण वह अपने मृत पति के साथ चिता पर सती जाने के लिए विवश हो जाती है। फूलवती के अनैतिक प्रेम-संबंध के कारण वह परिवार की नजर में घृणा की पात्र बन जाती है तो पति सेवा और धरम-करम का ढोंग करनेवाली बैरागन की तरह रहन-सहन के कारण वह समाज की नजर में महान पतिव्रता तथा सीता सावित्री बन जाती है। विद्या का अपनी माँ के अपवित्र जीवन के प्रति व्यंग्यात्मक कथन है, ''अम्मा जिस पिता के लिए तुमने इतने दिन सीता-सावित्री की तरह जिंदगी बिताई, आज क्या उस नाम को गंवा दोगी?''[22] गांववाले फूलवती का बहुत आदर करते थे। वृद्ध पति की सेवा और स्वयं को बुढ़िया या बैरागन मानना ही गांववालों के लिए एक महान कार्य था। समाज के लिए हरदेव और फूलवती भाई-बहन थे। धरम-करम करनेवाली फूलवती समाज में अपना पतिव्रता रुप बनाए रखने के लिए छटपटाती रहती है और इसी प्रयास में अपने पति के साथ जिंदा जलने के लिए विवश हो जाती है। किंतु फूलवती की विवशता विद्या के मन में घृणा पैदा करती है। माँ की महानता के सामने फूलवती का माँ रुप एक तिरस्कृत तथा घृणित साबित होता है। ढोंगी फूलवती को समाज पवित्र मानता है किंतु फूलवती को विवश होकर घृणित ढोंगी जीवन को अपनाना पड़ता है।

विद्या पवित्र और निष्कलंकित होते हुए भी एक विवश और घृणित जीवन बिताती है। अगर परिवारवाले ही उसे कलंकिनी, पापी मानते हैं तो समाज भी उसे पापिन एवं कलंकिनी मानेगा। विद्या भी स्वयं को दोषी मानती है क्योंकि वह समाज के सामने एक परपुरुष के हाथ से रबड़ी खाती हुई पकडी गई थी। साथ ही विद्या का जीवन परावलंबी होने के कारण उसे और भी विवशता से जीना पड़ता है। सच्चाई जाने बिना समाज विद्या जैसी विधवा एवं असहाय नारी को अपमानित जीवन

बिताने के लिए विवश करता है। समाज, माता-पिता की मृत्यु का कलंक विद्या पर ही लगाता हैं कभी लगता है कि ससुराल छोड़कर मायके आना विद्या की भूल थी किंतु वह अपनी माँ की कायरता से बेखबर थी। अपनी छोटीसी भूल और संस्कारित मन के कारण उसे विवश जिंदगी बितानी पड़ती है। माता-पिता के साथ समाज भी उससे घृणित व्यवहार करने लगता है।

विद्या सामान्य तथा आदर्श जीवन बिताना चाहती है। किंतु गांववाले उसे जीने नहीं देते। असहाय होने के कारण ताने मार-मारकर उसका जीना हराम कर देते हैं। जैसे - विद्या जब निर्दोष छूटकर गांव चली आती है तो उसे देख एक आदमी कहता है, "पुलिस के घाट का पानी पी आई अब तो मुंसी, डॉक्टर, वकील । ऐसे ही कौन बरी कर देवै। गिरधर पंडत का तो नाम ऐसा ऊँचा हुआ कि पूछो नहीं। और फिर अम्मा की कोख कैसी परतापिन हुई कि कुल उजागर कर गई यह छोरी। भली अम्मा सती हुई। आई भी कब लौट के जब सती का मेला जुड़ने को है।"[23] विद्या को भुखी-प्यासी रहना पड़ता था और ऐसे तानों को सुनकर उसे चक्करसा आने लगता है। सारा समाज विद्या के खिलाफ था। विद्या, परिवार तथा समाज के अत्याचार से त्रस्त होकर मरना चाहती है। इसी कारण उसकी सहायता करनेवाले रामभरोसे पर भी वह विश्वास नहीं करती। जैसे - एक प्रसंग में उसका कथन है, "हाँ । मैं जीकर भी क्या करुँगी? तू भी मुझसे अपना बदला ले ले। ले ले अपना बदला। तेरी भी छाती ठंड़ी हो जाए। तेरा नमक भी चुक जाए।"[24] अपने जीवन की सच्चाई बताने के लिए विद्या का मन छटपटा जाता है। किंतु जब वह गांववालों को पुकारती है तो सारे गांववाले उस पर थूकते हैं । वह मन-ही-मन सोचने लगती है अब कैसे कटेंगे दिन? क्या करेगी वह ? किंतु अंत में घृणित जीवन तथा विवशता

के कारण उसे रामभरोसे को अपनाना पड़ता है।

'पतझर' की मोहिनी मध्यवर्गीय सुशिक्षित युवती है। उसे भी विवशता को अपनाना पड़ता है। परिवारवालों के जातिभेद विचारों के कारण वह अपने प्रेम संबंध को छुपाके रखती है। प्रेमी से बिछड़ने के गम में मनोरुग्ण बन जाती है। डॉ. सक्सेना मोहिनी की विवशता को जान लेते हैं। संमोहन प्रक्रिया के आधार पर डॉक्टर,मोहिनी की जन्म-जन्मांतर की विवशता को सामने लाते हैं। जो चार हजार साल पूर्व सह 'प्रावर्णा' के रुप में समाज के बंधनों के कारण उसे मंदार से अलग होकर विवशभरी जिंदगी को अपनाना पड़ता है। नीलुख द्वारा नारीत्व को नष्ट करने के कारण वह मंदार की नहीं हो सकती। 'रमिया' भी समाज-बंधन के कारण अपने प्रेमी से अलग होकर किसी दूसरे के साथ विवाह कर विवश होकर जीवन बिताती है।

मोहिनी रोते-रोते अपनी विवशता स्पष्ट करती है, ''क्या बोलू डॉक्टर साहब, बोलना चाहती हूं तो बोल नहीं पाती। मुझे बोलने का अधिकार किसने दिया है?'' डॉ.सक्सेना उसे प्रोत्साहित करते हैं । उनका मत है कि मोहिनी जाति-बंधन तोडने से ड़रती है। मोहिनी सामाजिक बंधन में जकड़ी हुई नारी है। उसे माँ-बाप के प्रति अपने कर्तव्यों का एहसास था। डॉक्टर के कहने पर भी मोहिनी अपने संस्कार को मिटा नहीं सकती। कविता के माध्यम से वह अपनी युगों-युगों की विवशता को प्रकट करती है ,

''कर चुका हूँ भूल इतनी, बार पहले भी यहाँ पर,

अब उन्हें दोहरा नहीं सकता, हजारों बार फिर से

क्या करु लाचार हूँ किस ओर जाऊँ मैं कहाँ पर,

इसलिए इस द्वार पर ही आ गया हूँ हार फिर से ।''[26] मोहिनी को पारिवारिक तथा समाज बंधनों के कारण विवश जीवन जीना पड़ता है।

'कल्पना' की नीला अपने पिता के स्वार्थ का शिकार बन जाती है। नीला के पिता अपने स्वार्थ के कारण डॉक्टर के पिता और डॉक्टर को विवाह के लिए मजबूर करते हैं। परिणामतः मजबुरी के कारण नीला को दुखद वैवाहिक जीवन बिताना पड़ता है। बेकसूर होते हुए भी नीला को अपने घर में पति के साथ एक पराई औरत के समान जीवन बिताना पड़ता है। सुसंस्कारित और समझदार नारी होने के कारण विवश होकर अपना जीवन बिताना पड़ता है। वह न पति का विरोध कर सकती थी और न समाज का और न ही पिता के घर वापस जा सकती थी। आधुनिक और शिक्षित नारी होते हुए भी वह अन्याय का बदला लेना नहीं चाहती। क्योंकि निर्मला और डॉक्टर की बदनामी में वह अपनी बदनामी मानती है। इसी कारण वह चुप रहती है किंतु अंत में पति की आत्महत्या के कारण वह विधवा जीवन बिताती है और इसी विवशता के कारण नीला ने राघव जी को पत्र लिखकर पूछा था कि 'अब?' लेखक ने लिखा है, ''नीला के शून्य नयन आज मुझे ऐसे दिख रहे हैं जैसे मैं एक पृथ्वी हूँ जिस पर वह अपनी क्षितिज-रुपी बाँहे टेक देना चाहती है।''[27]

'निर्मला' को भी डॉक्टर की मजबुरी के कारण वकील के साथ विवश होकर विवाह करना पड़ता है, मजबुरी से वैवाहिक जीवन बिताना पड़ता है। किंतु प्रेम-संबंधों के कारण तन और मन की विवशता से वह बार-बार डॉक्टर के पास

आती है। निर्मला, डॉक्टर से दूर नहीं रह सकती। निर्मला का कथन है, "झूठ नहीं कहूँगी। ऐसा ही है। मैं इनके बिना नहीं रह सकती।"[28] किंतु डॉक्टर की पत्नी 'नीला' का त्याग और समर्पण के कारण लज्जित अवस्था में विवश होकर वह आत्महत्या करती है। क्योंकि उसे सिर छिपाने की जगह नहीं रही थी। अपने पति 'वकील' के सामने जाने के लिए राह नहीं थी। उसे ऐसा लगता था कि समाज में अब उसके लिए आदरणीय स्थान नहीं रहा था। इसलिए वह अपना जीवन मिटा देती है। और समाज के लिए वह घृणित साबित हो जाती है।

'विरहिणी यक्षी' को भी समाज-बंधन के कारण अपने प्रेमी से बिछड़कर अकेली और विवशभरी जिंदगी बितानी पड़ती है।

'महासती सीता' को भी पति की मजबूरी, समाज के लांछन के कारण निर्दोष होते हुए भी अंत तक विवशता से निर्वासित जीवन बिताना पड़ता है।

'बकुलावलिका' एक दासी होने के कारण वह चाहकर भी राजाज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकती थी। राजा और मालविका की भेंट करवाकर उसे राजा की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। किंतु फिर भी वह चिंतित है। क्योंकि अगर रानी को पता चल गया तो न जाने क्या होगा? बकुलावलिका का कथन है, ".....मैं बकुलावलिका, मैंने जीवन को कभी इतनी गहराई से नहीं लिया। अपना खाना-पीना, कुछ काम-धाम कर लेना, यही मेरा कार्य था। अब यह क्या कोई आसान काम है। मालविका मेरी सखी है, पर कहीं देवी को पता चला गया तो मेरी कितनी बड़ी मुसीबत आ जाएगी?......महाकवि मिलेंगे तो वे मुझसे पूछेंगे कि तैने कैसे उनका मिलन कराया। सच, अब सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है।"[29] किंतु राजा का आदेश होने

के कारण बकुलावलिका को विवश होकर यह कार्य करना पड़ता है। विवेच्य उपन्यासों में हर नारी पात्र को विवश होकर जीना पड़ रहा है।

(आ) जागृत नारी जीवन :-

समाज में नारी को दयनीयता तथा असहाय होने के कारण अन्याय एवं अत्याचारों को सहना पड़ता है। अपनी भावुकता तथा विवशता के कारण वह किसी का विरोध नहीं कर सकती। सहनशीलता के कारण वह दुखों को सहती जाती हैं जिन नारियों के पास सहनशक्ति ज्यादा होती है वह अंत तक जीवन में आती हुई कठिनाइयों तथा संकटों का सामना करती हैं और जिनके पास सहनशक्ति कम होती है वह हार कर अपना जीवन समाप्त करती हैं। किंतु आधुनिक युग की नारी में धीरे-धीरे विकास हो रहा है। शहर हो या गांव, नारी अन्याय एवं अत्याचार का विरोध कर रही है और एक जागृत जीवन बिता रही है। राघव जी ने भी विवेच्य उपन्यासों में नारी के जागृत जीवन को चित्रित किया है।

'राई और पर्वत' में विद्या ने अपने पूर्ण जीवन में दुखों के अलावा कुछ नहीं पाया। बारह साल में विवाह, सोलह साल में वैधव्य और उसके पश्चात् अपनी असहायता के कारण लगाए गए कलंक, लांछन आदि के कारण उसका मन छटपटा जाता है। किंतु सहनशीलता के कारण वह सब कुछ सहती रहती है। सीधी-साधी, भावुक और समझदार विद्या को चाहते हुए मजबूरन माँ को कलंकित करना पड़ता है। रामभरोसे को मारना पड़ता है। हरदेव की हत्या करनी पड़ती है जिसे वह एक बूरा काम समझती थी। किंतु विद्या की इस अवस्था का मूल कारण अपना परिवार और समाज था। विद्या सब कुछ सहन करते हुए अपना जीवन बिताने का संकल्प करती है किंतु परिवार के अलावा समाज भी उसे भुखे मारना चाहता है।

उसकी थोडी-बहुत जायदाद को हड़प करना चाहता है। तब विद्या जागृत हो जाती है। अपनी अंतर्गत शक्ति समाज को दिखाना चाहती है। रामभरोसे को मारने आए ग्यापा-चिरंजी के लाठी प्रहार विद्या स्वयं खाती है और रामभरोसे को बचाती है। गांववाले रामभरोसे और विद्या की बातें सुनकर घर में घुसकर रामभरोसे को मारते है तो विद्या उसे होश में लाती है और उसके लहू को अपने माथे पर लगाकर उसे उठाने का प्रयास करती हुई कहती है, "कहीं नहीं। यहीं रहेंगे..... रात बीत गई रामभरोसे। उजाला हो गया ......तू मेरा है..... मैं तेरी हूँ....... अब मुझे कोई डर नहीं...... सुनता है न?"[30] विद्या समाज के अन्याय के प्रति जागृत होकर अपना एक स्वतंत्र जीवन जीना चाहती है।

'पतझर' की मोहिनी परिवार तथा समाज - बंधनों के कारण एक दबी-दबी सी जिंदगी बिता रही थी। शिक्षित होते हुए वह प्रेमी से बिछड़ने के कारण मनोरुग्ण बन गयी थी। जब भी बोलना चाहती तो कविता के रुप में गाकर बोलती, नहीं तो गुंगी बन जाती है। लेकिन डॉ.सक्सेना के इलाज से वह धीरे-धीरे अपने अस्तित्व का एहसास करने लगती है। अपने कर्तव्यों को जान लेती है। जैसे वह खोई हुई पूर्व जिंदगी से जागृत हो गई हो। वह माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करती हुई अपनी इच्छानुसार जीवन बिताने का प्रयास करती है। उसका कथन है, "मुझे बोलना तो नहीं चाहिए लेकिन मैं यह जरुर कहूंगी कि जो माता-पिता का प्रेम किन्हीं शर्तों पर मिल सकता है, वह एक सामाजिक दिखावा है, उसके पीछे मूल में रागात्मक वृत्ति नहीं हैं, वे उनको दुखदाई हैं; लेकिन सवाल यह है कि वे दुखदाई क्यों है? केवल समाज के कारण से ही न। वैसे तो उसमें सुख-दुख की कोई बात नहीं। अगर वे इसकी कीमत मांगे कि हमने इतने दिन तक रोटी खिलाई थी, इसलिए

हमें परंपरा की चक्की में पिसना पड़ेगा तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। लेकिन इसी शर्त पर कि आयंदा के लिए विवाह बंद हो जाए और बच्चे न हों ताकि उनके ऊपर माँ-बाप का अहसान भी न हो. ताकि हम लोग उनकी इच्छाओं को न कुचलें।"[31] इसी तरह मोहिनी जन्म-जन्मांतर से अन्याय को सहती आयी है। एक दबी-दबी सी जिंदगी बिताती आई है किंतु जन्म-जन्मांतर के दब्बू जीवन से वह जागृत हो जाती है और अपनी इच्छानुसार माता-पिता तथा समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जगन्नाथ के साथ जीवन बिताने का संकल्प करती है। मोहिनी का कथन है, "..... मैं हिंन्दू स्त्री हूँ और हिन्दू स्त्री तन-मन से एक ही बार अपना पति चुनती है। इसलिए अब मैं पीछे नहीं हट सकती क्योंकि यह मेरे लिए अधर्म होगा।"[32]

'कल्पना' में नीला अपनी विवश जिंदगी में स्त्री-स्वतंत्रता, स्त्री-पुरुष के अधिकार के संबंध में अपने विद्रोही विचार अपनी सहेली 'राजम' को सुनाती है किंतु अपने पति के सामने वह चुप ही रहती है। मन-ही-मन तिलमिला उठती है। जब अपने पति की प्रेमिका आधी रात में पति से मिलने आती है तो नीला उन दोनों को घर में बुलाकर अपने प्रेम के आवेश को पूरा करने की इजाजत देती है और निर्मला को एक सुझाव देती है, कि ".....जो पुरुष मुझे उपेक्षित करके तुम्हें ला सकता है, उसका पूरा भरोसा मत करो। संभव है वह समय पर तुम्हें छोड़ दें।"[33] इससे नीला के जागृत जीवन का परिचय होता है और वह निर्मला को भी जागृत करना चाहती है। नीला अपने मन में स्थित बदले की भावना को मन में ही दबाकर रखती है क्योंकि निर्मला और डॉक्टर की बदनामी के साथ नीला भी बदनाम हो सकती थी और वह यह नहीं चाहती, इसी कारण चुप रहती है। नीला के मत से वे दोनों एक-दूसरे के साथ रह सकते थे। समाज का विरोध कर सकते थे। किंतु समाज के

डर से उन्होंने अपनी मर्जी के खिलाफ शादियाँ की थी और अंत में अविचारी मन एवं सहनशक्ति की कमी के कारण आत्महत्या कर अपना जीवन मिटा दिया था। इसी कारण नीला का मन उनके प्रति घृणित हो जाता है। नीला राघव जी को पत्र लिखकर पूछती है कि अब वह क्या करें? तो वे उसे अपना जीवन व्यस्त बनाने और स्वावलंबी बनने का सुझाव देते हैं।

4.1.4 नारी का धार्मिक जीवन :-

समाज में मध्यवर्गीय नारी जीवन धार्मिकता से प्रभावित दिखाई देता है। समाज में प्रचलित रुढ़ि-परंपरा, कर्मकांड़, बाह्यार्डबर आदि के कारण पुरुष की अपेक्षा नारी जीवन धार्मिकता को अधिक अपनाता है। मध्यवर्गीय नारियों की ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा, व्रत-उपवास, पूजा-पाठ, अंधविश्वास आदि के साथ धार्मिक जीवन स्पष्ट होता है। राघव जी के विवेच्य उपन्यासों में नारी के धार्मिक जीवन को दिखाया है जो भाग्य, पाप-पुण्य को मानती है। अंधविश्वास के कारण उनका धार्मिक पक्ष सामने आता है।

(अ) भाग्यवादी नारी जीवन :-

नारियों में अधिकतर नारियाँ नसीब या भाग्य पर विश्वास रखती हैं। अपने जीवन में आए हुए संकटों तथा कठिनाइयों को भाग्य तथा नसीब के नाम से कोसती हुई अपने मन को समझाती है, तसल्ली देती है।

'राई और पर्वत' की विद्या भाग्यवादी है। विद्या अपने विधवा जीवन को भाग्य की देन मानती है। माँ-पिता उसका पुनर्विवाह करना चाहते हैं किंतु वह पुनर्विवाह का विरोध करती है। उसका कथन है, "भाग में होता दादा, तो यही सुहाग

क्यों उजड़ता? अब तो जित्ते दिन बाकी हैं यों ही गुजर जाएँगे। पुरनविवाह तो सरधा की बात है। हौंस बाकी हो तब न?''[34] विद्या, विधवा जीवन को अस्तित्व हीन मानती है। उसके मत से विधवा को रुखा-सूखा खाकर जीवन बिताना चाहिए । विद्या का कथन है, ''दूध पीकर क्या करुंगी, अम्मा। मैं ठहरी विधवा। मेरे भाग में तो रुखा-सूखा लिखा है।''[35] विद्या अपनी असहायता, विवशता को भगवान की इच्छा मानती है, क्योंकि भगवान ने उसे औरत बनाया था। और साथ में उसे वैधव्य जीवन बिताना पड़ रहा था। वह स्वयं को अभागन मानती है। एक मरी हुई औरत के समान वह विधवा के जीवन को मानती है। विद्या का ईश्वर पर अटूट विश्वास था। रामभरोसे ने लायी रोटी खाने के लिए वह इन्कार कर देती है क्योंकि एक गुंडे और घृणित आदमी की रोटी खाते समय दूसरा कोई नहीं किंतु परमेश्वर तो देखता होगा ऐसी उसकी धारणा है। विद्या पाप-पुण्य पर विश्वास रखती है।

विद्या की माँ, अपनी बेटी को भी अनैतिक मार्ग पर चलाना चाहती है किंतु माँ का असली रुप मालूम हो जाने पर विद्या, माँ की दुश्मन बन जाती है। अपनी माँ के व्यवहार पाप मानती हैं अपनी माँ को परमेश्वर के अस्तित्व का परिचय देती हुई और माँ के पापी जीवन को स्पष्ट करती हुई विद्या कहती है, ''तू जानती है अम्मा। तू पापिन है, मैं नहीं। तू मुझसे डरती है। मैंने नाम गंवाया है, लेकिन जान रहते सत् नहीं गवाऊंगी। मैं जानती हूँ कि तेरे साथ जुल्म हुआ कि तू बचपन में बिकी और मेरे साथ जुल्म हुआ कि मैं विधवा रांड़ हो गई, लेकिन पाप पाप है, वह है परमात्मा। पाप-पुण्य का फल परमात्मा देता है।''[36] विद्या को लगता है परमात्मा मरने के बाद मिलता है। अगर माँ को बदनाम किया तो मृत्यु के पश्चात् तो परमात्मा को जवाब देना पड़ेगा। क्योंकि विद्या 'माँ' के रुप को महान मानती थी। उसकी पूजा

करती थी। इसी प्रकार विद्या पाप-पुण्य, आत्मा-परमात्मा, भाग्य को माननेवाली आदर्श नारी थी।

(आ) अंधविश्वासू नारी जीवन :-

'पतझर' में डॉ.सक्सेना मोहिनी से प्रेम की व्याख्या चाहते हैं। वह किसके प्रति आकर्षित है यह समझना चाहते हैं किंतु मोहिनी डॉक्टर के सवालों का जवाब नहीं दे सकती। मोहिनी सुसंस्कारित और शिक्षित नारी है परंतु वह यह नहीं जानती की प्रेम जैसी वस्तु पवित्र है या वासना है। मोहिनी की इस दृविधा मनस्थिति को पहचानते हुए डॉ.सक्सेना भारतीय संस्कार को स्पष्ट करते हुए कहते हैं, ''हमारे संस्कार हमारे भीतर इतने गहरे उतर चुके हैं कि हम उन्हीं में पाप-पुण्य को मापते हैं। लेकिन सत्य यह है कि आज जो बहुत कुछ पाप कहलाता रहा है, वास्तव में वह अपने-आप में पाप नहीं है। पाप और पुण्य समाज के बदलते हुए नियम हैं। एक युग में जो पाप रहता है दूसरे युग में वह पुण्य भी बन सकता है।''[37]

'राई और पर्वत' में फूलवती भी धार्मिक है। वृद्ध पति के कारण वह स्वयं को बूढ़िया मानने लगती है। वह पति की सेवा करती है। पूजा-अर्चा, धरम-करम में लगी रहती है। रोज मंदिर जाती है। अपनी विवाहित बेटी को वैधव्य के पश्चात् वह अपने पास नहीं रखना चाहती क्योंकि धर्म के नियमानुसार उसका कहना हे, ''स्त्री तो जहाँ ब्याह गई, वहां से उसकी लाश निकले तो भला। मेरे पेट की जनी है,पर लोक-मरजाद तो है ही, सो क्या हम डिगा सकेंगे।''[38] फूलवती धर्म-मर्यादा के नियमों को माननेवाली थी। फूलवती न चाहते हुए सती गयी किंतु फूलवती का यह धरम-करम एक ढोंग था। वह स्वार्थ के लिए, दिखावे के लिए

ढोंगी धार्मिक जीवन को अपनाती है। और पति तथा समाज की नजर में महान बन जाती है। पति के साथ सती जाना वह पत्नी का धर्म मानती है, देवी भवानी की आज्ञा मानती हैं जैसे "भवानी का आदेश है...... होय होय री मैया भवानी....आग फूल हो जाए, जो तेरी महर हो जाए......।"[39] किंतु आग लगते ही फूलवती उछलकर चिल्लाती है कि 'हाय मरी रे', जैसे उसे जबरदस्ती जलाया गया हो। इसी प्रकार फूलवती ढोंगी धार्मिक जीवन बिताती है।

'कल्पना' में अवदातिका द्वारा महासती सीता का भी अंधविश्वासू धार्मिक जीवन का चित्रण हुआ है। सीता अपने पति का साथ निभाना अपना धर्म मानती है। सुख हो या दुख वह पति का साथ देती है। राम के वनागमन की आज्ञा के पश्चात् सीता अपना धर्म निभाती हुई राम के साथ वन जाती है। सीता को अपने साथ ले जाने के लिए राम इन्कार करते हैं किंतु सीता अपने सहधर्मिणी रुप का परिचय देती है। पति की सेवा करना अपना धर्म मानती है। धर्मानुरुप आचरण करती हुई वह वन को भी महल मानती है। लक्ष्मण भी रोहिणी-चंद्रमा, वृक्ष-लतिका, गजराज-हथिनिया का उदाहरण देकर पति-पत्नी के धार्मिक संबंध का महत्व स्पष्ट करते हैं। जब समाज के लांछन और लोक-लाज के कारण राम,सीता को निर्वासित करते हैं तो बिना किसी का विरोध कर वह पति की आज्ञा का पालन करती हुई अपना धर्म निभाती है।

'अवदातिका' दासी होने के कारण वह अपने स्वामी तथा स्वामिनी की सेवा करना अपना धर्म मानती है। वह महाकवि भार पर रुष्ट होती है कि उन्होंने मुझे रामायण में क्यों नहीं दिखाया। वह माता कौसल्या, महाराज दशरथ, माता सुमित्रा की सेवा करना चाहती थी। किंतु महाकवि ने अवदातिका को रामायण में कहीं स्थान

नहीं दिया था। अवदातिका अंधविश्वास भरा जीवन बिताती है। वह वल्कल को अशुभ मानती है क्योंकि वल्कल को सीता ने पहनने के पश्चात् राम का राजतिलक रुकने तथा राम को चौदह वर्ष वनवास की खबर सुननी पड़ती है। राम-सीता के वनागमन का दोष अवदातिका स्वयं पर लगाती है। जैसे अवदातिका द्वारा लाए वल्कल को पहनने के कारण ही राम-सीता और लक्ष्मण को चौदह वर्ष वनवास भुगतना पड़ा। अवदातिका की इसी धारणा के कारण वह अंधविश्वासू जीवन बिताती है और दुखी हो जाती है।

4.1.5 नारी का आर्थिक जीवन :-

समाज में अर्थ को विशेष महत्त्व दिया जाता है। जिस व्यक्ति की आर्थिक स्थिति अच्छी हो, समाज में वहीं प्रतिष्ठित कहलाता है। मध्य वर्ग आर्थिक दृष्टि से अति संपन्न भी नहीं होता और न ही अर्थहीन होता है। नारी के विषय में विशेषकर आर्थिक दृष्टि से वह परावलंबी ही होती है। जैसे - राघव जी के विवेच्य उपन्यासों की नारियों का जीवन परावलंबी है।

(अ) परावलंबी नारी जीवन :-

समाज में उच्चवर्गीय नारी जीवन आर्थिक दृष्टि से संपन्न होता है। निम्नवर्गीय नारी मजबूरी के कारण स्वंय रोजगार करती हुई अपना जीवनयापन करती है किंतु मध्यवर्गीय नारी न ही आर्थिक दृष्टि से संपन्न होती है और न स्वयं कमा सकती है। नौकरी करना हीन माना जाता है। अत: उन्हें परावलंबी जीवन बिताना पड़ता है। जैसे 'राई और पर्वत' की विद्या, 'पतझर' की मोहिनी तथा 'कल्पना' की नीला परावलंबी जीवन व्यतीत करती हैं।

'राई और पर्वत' में विद्या आर्थिक दृष्टि से परावलंबी जीवन बिताती है। अपने वैधवावस्था में विद्या मास्टरनी बनकर स्वावलंबी जीवन बिताना चाहती थी किंतु माँ के विरोध के कारण उसे चुप रहना पड़ता है। माँ, गांव की एक दुश्चरित्र मास्टरनी 'रामप्यारी' का उदाहरण देकर इस पेशे के खिलाफ विद्या का मन कलुषित करती है। विद्या अपने चरित्र को विशेष महत्त्व देती थी। परावलंबी जीवन के कारण विद्या को ससुराल और मायके में भी बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परावलंबी जीवन के कारण चाहते हुए भी अपनी माँ के व्यभिचारी रुप को छुपाके रखती है। माँ के अन्याय को चुपचाप सहन करना पड़ता है। निष्कलंकित होते हुए कलंकित जीवन को अपनाना पड़ता है। अपने कैदी जीवन में रामभरोसे की मदद के कारण उसकी ऋणी होना पड़ता है। कत्ल के इल्जाम से निर्दोश छूटकर भी गांववाले उसकी सहायता नहीं करते। अत: विद्या को भुखी-प्यासी तड़पना पड़ता है। न चाहते हुए भी दुबारा रामभरोसे की सहायता को स्वीकार करना पड़ता है। और अंत में उसको अपनाना पड़ता है।

'पतझर' की मोहिनी भी एम्.ए.पास है और पिता पर अवलंबित होने के कारण वह अपनी इच्छा के अनुसार अपना जीवन बिता नहीं सकती। अपने पिता की इच्छानुसार वह एक घुटनभरी जिंदगी जीती है, मनोरुग्ण बन जाती है। अपने प्रेमी से बिछड़ जाती है। किंतु डॉ.सक्सेना की प्रेरणा से वह अपने परावलंबी और संस्कारित जीवन को विद्रोही रुप में प्रकट करती हुई कहती है, ''.....अगर वे इसकी कीमत मांगे कि हमने इतने दिन तक रोटी खिलाई थी, इसलिए हमें परंपरा की चक्की में पिसना पड़ेगा तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। लेकिन इसी शर्त पर कि आयंदा के लिए विवाह बंद हो जाए और बच्चे न हों ताकि उनके ऊपर माँ-बाप का एहसान भी न हो, ताकि हम लोग उनकी इच्छाओं को न कुचलें।''[40] मोहिनी जन्म-जन्मांतर से

'प्रावर्णा', 'रमिया', 'प्रतीची' के रुप में परावलंबी जीवन बिताती आई है।

'कल्पना' में नीला भी सुशिक्षित होकर पति पर निर्भर रहती है। नीला का पति 'डॉक्टर' उसे वैवाहिक सुखों से वंचित रखता है। विवाह के पूर्व पिता पर और विवाह पश्चात् पति पर निर्भर रहती है। अपने मन का विद्रोह सहेली 'राजम' के पास उगलती है। वे दोनों स्त्री को अबला मानती हैं, स्त्री-पुरुष से रक्षा चाहती है। उनके मत से कुछ नारियाँ स्वावलंबी होकर भी पुरुष की गुलाम बनती है। नीला, अपने पति का पर स्त्री से होनेवाले प्रेम-संबंध को स्वीकार करती है। वह पत्नी का अधिकार छीन कर लेना नहीं चाहती। और अंत में पति की आत्महत्या के पश्चात् अकेली रह जाती है। लेखक ने ऐतिहासिक कथाओं के आधार पर कल्पना के सहारे युगों-युगों से नारी के परावलंबी जीवन को चित्रित किया है। जेसे - यक्षी, सीता, मालविका आदि का जीवन परावलंबी है जिसके कारण वह अंत तक दुख-ही-दुख पाती हैं। इसी कारण लेखक ने नारी को स्वावलंबी बनने, पुरुष की गुलामी छोड़ने का संदेश दिया है। जैसे "......तुम अपनी गैर जिम्मेदारी, कामचोरी को छिपाओ मत।...... कुछ सम्मानित जीवन बिताओ। इस पितृसत्ता के संबंध झूठे हैं, नकली है, व्यक्तित्व के विकास पर बोझ है, समाज में घृणा पैदा करते हैं।......जब तक तुम गुलाम रहोगी, तब तक पुरुष तुम्हारे लिए बैल बना रहेगा और.....तुम्हें सताने की चेष्टा करेगा ही। जीवन इतना व्यस्त है नहीं, जितना बना लिया गया है।.......उसे आजाद करो ।"[41]

निष्कर्ष :-

समाज तथा परिवार के निर्माणकर्ता स्त्री ओर पुरुष है। राघव जी ने अपने उपन्यासों में पुरुष की अपेक्षा स्त्री को विशेष महत्त्व दिया है। उनके मतानुसार

स्त्री ने दया, क्षमा, शांति, सहनशीलता और त्याग के लिए अपने अस्तित्व को मिटाया है। अस्तित्वहीनता के कारण वह पुरुष और समाज की नजर से गिर गई है। नारी को पुरुष प्रधान समाज के बंधन तथा कुरीतियों ने जकड़ रखा है। राघव जी ने सामाजिक तथा पारिवारिक बंधनों में जकड़ी हुई नारी जीवन को 'राई और पर्वत', 'पतझर' और 'कल्पना' उपन्यासों में चित्रित किया है। उन्होंने इन उपन्यासों द्वारा पुरुष और समाज की कुप्रथाओं के प्रति अपना कड़ा विरोध प्रदर्शित कर नारी को स्वतंत्र तथा मुक्त जीवन प्राप्त करने का संदेश दिया है।

राघव जी के विवेच्य उपन्यासों की नारी परंपरागत संस्कारों में जकड़ी हुई कुंठित, पीड़ित, शोषित एवं अभिशप्त जीवन बिताती हुई हम पाते हैं। वे अपनी सहनशीलता के बल पर सुख-दुख के साथ अपना जीवन व्यतित करती हैं। इन नारियों को सुख की अपेक्षा दुखों और कठिनाइयों का अधिक सामना करना पड़ता हैं। ये नारियाँ अपने-अपने द्वंद्वात्मक जीवन को व्यतीत करते-करते विद्रोह भी करती हैं किंतु उनका यह विद्रोह परंपरागत संस्कारों और बंधनों को तोड़ नहीं सकता। जब कभी वे इन बंधनों को तोड़ने का प्रयास करती हैं समाज और परिवार उन्हें कलंकित कर देता है। अतः विवेच्य उपन्यासों की नारी को समाज के बवंड़रों में घिरी हुई, पुरुष प्रधान समाज का सामना करती हुई और अपनी परिस्थितियों से समझौता करती हुई हम पाते हैं।

विवेच्य उपन्यासों में अशिक्षित और सुशिक्षित नारी के व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक जीवन को स्पष्ट कर राघव जी ने मध्यवर्गीय नारी की वास्तविक स्थिति, नारी की परवशता और अस्तित्वहीनता की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया है। राघव जी ने नारी के भिन्न

रुपों के कारण उनके जीवन के चढ़ाव-उतारों को चित्रित किया है। जैसे - 'राई और पर्वत' की विद्या, 'पतझर' की मोहिनी और 'कल्पना' की नीला, यक्षी, अवदातिका, बकुलावलिका का व्यक्तिगत जीवन सरल और भावुक था किंतु परिवार और समाज इनके सरल तथा भावुक स्वभाव का फायदा उठाते हुए अपना उल्लू सीधा करवाते हैं । अतः इन नारियों को ऐसे स्वभाव के कारण अनेक संकटों का सामना करना पड़ता है। जैसे - विद्या को बदनाम किया जाता है। मोहिनी पर इंजिनिअर के साथ विवाह करने के लिए दबाव डाला जाता है। नीला को वैवाहिक सुखों से वंचित रहना पड़ता है । सीता को अग्निपरीक्षा देनी पड़ती है आदि । इसी तरह सरल तथा भावुक नारी अपना जीवन दुख-दर्द में बिताती हैं। इसके विपरित स्वच्छंद नारी अपना जीवन स्वतंत्रता से बिताती हैं। न वह समाज की पर्वा करती है और न परिवार की। अपनी इच्छानुसार वह व्यवहार करती है। जैसे - 'राई और पर्वत' की फूलवती, -'कल्पना' की निर्मला आदि नारियाँ अपनी इच्छानुसार पर पुरुष से संबंध रखती हैं । उसके साथ घूमती-फिरती हैं । किंतु इन स्वच्छंदी नारियों को अंत में अपमानास्पद अवस्था में जीवन मिटाना पड़ता है।

नारी का पारिवारिक जीवन शोषित तथा पीड़ित दिखाई देता है। विद्या, नीला, मोहिनी जैसी नारियों का उनके परिवार द्वारा ही शोषण किया जाता है। जैसे- वैधव्य की असहायता तथा फूलवती के स्वार्थ के कारण विद्या को परिवार से हटाने के लिए संत्रस्त किया जाता है। परिवारवालों की जातिभेद वृत्ती के कारण मोहिनी को अपने प्रेमी से बिछड़ने के कारण मनोरुग्ण बनना पड़ता है। नीला को अपने ही घर में पराई औरत जैसा जीवन बिताना पड़ता है। ऐसी घटनाओंसे विद्या, नीला, मोहिनी जैसी नारियों का पारिवारिक जीवन शोषित तथा पीड़ित दिखाई देता है। किंतु कभी-कभी फूलवती जैसी नारी अपने परिवारवालों के अन्याय से संतप्त होकर

कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती है। परिवारवाले तथा समाज के साथ वह दुर्व्यवहार करती है। अपनी ही बेटी को अनैतिक मार्ग पर चलाना चाहती है। परंतु फूलवती की कठोर वृत्ति का कारण पुरुष प्रधान समाज ही है, जिसने फूलवती को जबरदस्ती से अधेड़ वृद्ध के साथ बांध दिया था। देवर द्वारा बलात्कार की शिकार होना पड़ा था। ऐसी दुर्घटना के कारण वह मानसिक रुप से विकृत बनकर कर्मठ तथा कठोर जीवन बिताती है।

सामाजिक जीवन में नारी को समाज द्वारा कलंकित तथा घृणित जीवन बिताना पड़ता है। संस्कारित और भावुक होने के कारण वह अन्याय को चुपचाप सहती रहती है। संस्कारित मन और असहायता के कारण उसे विवशता से जीवन बिताना पड़ता है। विद्या जैसी विधवा और असहाय नारी को छोटीसी भूल के कारण समाज कलंकिनी तथा कुलटा मानता है। विद्या, मोहिनी, नीला जैसी नारियाँ समझदार, असहाय सुसंस्कारित होने के कारण वह अन्याय का बदला नहीं ले सकती और पारिवारिक तथा सामाजिक बंधनों को तोड़ नहीं सकती। अंत में परिवार तथा समाज के अन्यायों से थक कर वे जागृत होकर जीवन बिताना चाहती हैं। अपने खोए हुए अस्तित्व के प्रति सतर्क हो उठती हैं। समाज तथा परिवार के अन्यायों के खिलाफ विद्रोह कर उठती हैं।अपने दब्बू जीवन को आजाद करती हुई एक जागृत नारी जीवन बिताती है। जैसे-विद्या, समाज के प्रति विद्रोह करती हुई रामभरोसे के साथ पुनर्विवाह करना चाहती है। मोहिनी अपने कर्तव्यों का पालन करती हुई जगन्नाथ के साथ जीवन बिताना चाहती है। इसी प्रकार इन नारियों का सामाजिक जीवन घृणित तथा विवशता के साथ-साथ जागृत भी दिखाई देता है।

'राई और पर्वत' की विद्या, फूलवती, 'कल्पना' की नीला, अवदातिका, सीता आदि नारियाँ भाग्य, धर्म, रुढ़ि-परंपरा तथा परमात्मा को मानती हुई अपना धार्मिक जीवन बिताती हैं। रुढ़िग्रस्त संस्कारों में बंधी विद्या भाग्यवादी है। विधवा जीवन को भाग्य की देन मानती हुई, पाप-पुण्य और ईश्वर पर अटूट विश्वास रखती है ये नारियाँ मध्यवर्गीय होने के कारण परमेश्वर, पत्नी-धर्म का पालन कर अंधविश्वासू जीवन बिताती हैं, जिसके कारण उन्हें अपने जीवन में दुख-ही-दुख भुगतने पड़ते हैं। नीला, सीता जैसी नारियाँ पति के अन्याय को सहती रहती हैं। पति की आज्ञा का पालन कर अपना पत्नी धर्म निभाती है। अवदातिका वल्कल को अशुभ मानती है। उसका विश्वास है कि वल्कल के कारण ही अपने स्वामी को वन जाना पड़ा । और स्वयं को दोषी मानकर अंधविश्वासपूर्ण जीवन बिताती है। किंतु फूलवती अपने स्वार्थ और चरित्र की महानता को बढ़ाने के लिए पूजा-अर्चा, धरम-करम में लगी रहती है। धर्म की मर्यादा का पालन करती हुई बाह्याडंबरी जीवन व्यतीत करती है। इसी प्रकार विद्या, नीला, अवदातिका, सीता आदि नारियाँ भाग्यवादी और अंधविश्वास के साथ अपना धार्मिक जीवन व्यतीत करती हैं।

विवेच्य उपन्यासों की नारियाँ मध्यवर्गीय होने के कारण आर्थिक दृष्टि से परावलंबी जीवन बिताती हैं। विद्या अशिक्षित होते हुए भी स्वावलंबी बनना चाहती है किंतु परिवार के विरोध के कारण वह अपनी असहाय तथा वैधव्य के साथ परावलंबी जीवन बिताती है। नीला, मोहिनी शिक्षित होकर भी पिता तथा पति पर अवलंबित रहती हैं। परावलंबी जीवन के कारण वह अपने अस्तित्व को भूल जाती हैं, और जीवन में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे - विधवा विद्या को कलंकित जीवन बिताना पड़ता हैं। मोहिनी को मनोरुग्णता को सहना पड़ता है। नीला को अपने ही घर में पराई औरत सा जीवन बिताना पड़ता है।

इसी कारण राघव जी नारी शिक्षा को नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक मानते हैं। किंतु उसके लिए आर्थिक स्वावलंबन की आवश्यकता है क्योंकि आर्थिक पराधीनता के कारण ही नारी को पुरुष के दबदबे को स्वीकार करना पड़ता है। अतः राघव जी ने विवेच्य उपन्यासों में नारी जीवन के विविध पहलुओं को प्रस्तुत कर नारी को स्वावलंबी, आत्मनिर्भर तथा स्वतंत्र बनने का संदेश दिया है और पुरुष प्रधान समाज की कुरीतियों के प्रति अपना कड़ा विरोध दर्शाया है।

: संदर्भ सूची :

(1) महादेवी वर्मा , शृंखला की कड़ियाँ, पृ.84

(2) राम आहुजा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, पृ.87

(3) वही, पृ.92

(4) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.24

(5) वही, पृ.61

(6) वही, कल्पना, पृ.25

(7) वही, पृ.52

(8) वही, पृ.66,67

(9) वही, पृ.71

(10) वही, पृ.92

(11) वही, राई और पर्वत, पृ.78

(12) वही, कल्पना, पृ.32

(13) वही, पृ.31

(14) डॉ(श्रीमती) वीणा गौतम, आधुनिक हिंदी नाटकों में मध्यवर्गीय चेतना, पृ.50

(15) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.66

(16) रांगेय राघव, राई और पर्वत, पृ.76

(17) वही, पतझर, पृ.80

(18) वही, राई और पर्वत, पृ.67

(19) वही, पृ.63

(20) वही, पतझर पृ.70

(21) वही, राई और पर्वत, पृ.177

(22) वही, पृ.80

(23) वही, पृ.121

(24) वही, पृ.44

(25) वही, पतझर, पृ.61

(26) वही, पृ.65

(27) वही, कल्पना, पृ.38

(28) वही, पृ.32

(29) वही, पृ.91

(30) वही, पृ.181,182

(31) वही, पतझर,पृ.118

(32) रांगेय राघव, पतझर, पृ.120

(33) वही, कल्पना, पृ.33

(34) वही, राई और पर्वत, पृ.52

(35) वही, पृ.62

(36) वही, पृ.73,74

(37) वही, पतझर, पृ.71

(38) वही, राई और पर्वत, पृ.54

(39) वही, पृ.81, 82

(40) वही, पतझर, पृ.118

(41) वही,कल्पना, पृ.112,113

****